NEERAJ®

समाजशास्त्रीय जाँच की विधियाँ

(Methods of Sociological Enquiry)

B.S.O.C.-134

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

समाजशास्त्रीय जाँच की विधियाँ

(Methods of Sociological Enquiry)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान कार्य 1
(Research in Social Sciences)

2. सिद्धांत और शोधकार्य 15
(Theory and Research)

3. सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता 29
(Objectivity in Social Science)

4. प्रतिवर्तता 43
(Reflexivity)

5. ऐतिहासिक विधि 53
(The Historical Method)

6. तुलनात्मक विधि 65
(The Comparative Method)

7. नृजाति प्रणाली विज्ञान 77
(Ethnomethodology)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
8.	सैद्धांतिक विश्लेषण (संरचनावादी एवं उत्तर-आधुनिकतावादी) (Interpretative – Structuralist and Post Modernist)	67
9.	महिलावादी परिप्रेक्ष्य (Feminist Perspective)	84
10.	मात्रात्मक पद्धतियां (Quantitative Method)	94
11.	गुणात्मक पद्धतियां (Qualitative Methods)	119
12.	सामाजिक अनुसंधान में सूचना और तथा सम्प्रेषण तकनीकी (ICT in Social Research)	142

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

समाजशास्त्रीय जाँच की विधियाँ

(Methods for Sociological Enquiry)

B.S.O.C.-134

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. सामाजिक शोध से आप क्या समझते हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 1 तथा प्रश्न 2

प्रश्न 2. सिद्धांत और शोध के बीच संबंधों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 4

प्रश्न 3. वेबर के वस्तुनिष्ठता पर दिये गये विचारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-38, प्रश्न 5

प्रश्न 4. ए. गॉडनर के अनुसार प्रतिवर्तिता के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-43, 'गॉल्डनर और प्रतिवर्तता (रिफ्लेक्सिविटी)'

प्रश्न 5. भारत में ऐतिहासिक शोध के उपयोग पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-53, 'परिचय', पृष्ठ-56, 'भारत में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग'

प्रश्न 6. रेडक्लिफ ब्राउन के सामाजिक विश्लेषण में तुलनात्मक शोध के उपयोग पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-66, 'रेडक्लिफ-ब्राउन और तुलनात्मक विधि', पृष्ठ-63, प्रश्न 3

प्रश्न 7. शोधकर्ता की लैंगिकता शोध को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-87, 'नारीवादी अनुभवजन्य दृष्टिकोण', पृष्ठ-90, प्रश्न 9

प्रश्न 8. गुणात्मक शोध की मुख्य विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-125, प्रश्न 1

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

समाजशास्त्रीय जाँच की विधियाँ

(Methods for Sociological Enquiry)

B.S.O.C.-134

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. सामाजिक शोध में समाजशास्त्रीय कल्पना के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'सामाजिक शोध : अर्थ एवं परिभाषा', पृष्ठ-7, 'अध्ययन की उपकल्पनाओं/प्राकल्पनाओं को स्पष्ट करना'

प्रश्न 2. सामाजिक शोध क्या है? इसके विभिन्न तत्वों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-16, प्रश्न 1

प्रश्न 3. समाजशास्त्र 'मूल्य-विहीन' कैसे हो सकता है? एक आदर्श प्रारूप के उचित चित्रण के साथ व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-76, प्रश्न 7

प्रश्न 4. सामाजिक विश्लेषण की आगमनात्मक एवं निगमनात्मक विधियों के बीच अंतर कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-119, 'आगमन पद्धति विधि', 'निगमन पद्धति या विधि', पृष्ठ-127, प्रश्न 2

प्रश्न 5. मैक्स वेबर की तुलनात्मक विधि पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-50, 'वेबर का मत'

प्रश्न 6. नारीवादी अनुभवजन्य के दृष्टिकोण पर विस्तार से लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-87, 'नारीवादी अनुभवजन्य दृष्टिकोण', पृष्ठ-90, प्रश्न 9

प्रश्न 7. मात्रात्मक शोध के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-17, प्रश्न 2 '(ख) विवरणात्मक शोध', पृष्ठ-19, '(ङ) व्याख्यात्मक (कार्य-कारणात्मक)', 'लम्बे समय चलने वाला शोध', 'प्रयोगात्मक तथा मूल्यांकनकारी शोध', अध्याय-10, पृष्ठ-100, 'सहसंबंध'

प्रश्न 8. नृजाति प्रणाली विज्ञान क्या है? इसके अनुप्रयोग पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-59, 'नृजाति पद्धति : अर्थ', 'नृजाति पद्धति का कार्यक्षेत्र'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समाजशास्त्रीय जाँच के तरीके
(Methods of Sociological Enquiry)

सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान कार्य
(Research in Social Sciences)

1

परिचय

मानवजाति में प्रत्येक प्राणी में किसी-न-किसी रूप में एक अनुसंधानकर्ता होता है, जिनका तात्पर्य अपने सामाजिक विश्व को अर्थ प्रदान करने, व्याख्या करने के साथ-साथ भविष्यवाणी भी करना होता है। समाज संबंधी अनुसंधान कार्य और सिद्धांत का यह कार्य अनेक विषयों को शामिल करता है। हममें से कुछ लोग सामाजिक वातावरण में होने वाले किसी-न-किसी मुद्दे को लेकर चिंतित अथवा उससे जुड़े विषय से परेशान हो सकते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि हम सभी एक समग्र के रूप में हमारे गांव में और वैश्विक स्तर पर होने वाले सूक्ष्म और वृहद् दोनों ही मुद्दों से चिंतित हो सकते हैं। हम अपने दैनिक अनुभवों को समझने और समझाने में रुचि रख सकते हैं। जिज्ञासा का यही मूल भाव सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की बुनियादी और संरचनात्मक नींव है।

मानव विचारों का अभिग्राहक नहीं होता है, परंतु उसी के अनुसार उस पर अपनी प्रतिक्रिया करता रहता है। मनुष्य की इस प्रकृति के कारण सामाजिक वास्तविकता, मानव जाति को समझने, उसकी व्याख्या करने के लिए हमेशा बदलती रहती है और इस परिवर्तित सामाजिक वास्तविकता की भविष्यवाणी करने के लिए अनेक प्रकार के सवालों को प्रस्तुत करने के साथ-साथ अनेकों सवालों को उठाती रहती है। मानवजाति और सामाजिक वास्तविकता दोनों के इस गतिशील चरित्र के कारण सामाजिक विज्ञान में शोध कार्य एक विशेष स्थान रखता है। ऐसी अवस्था में शोध कार्य वास्तविकता उन कारणों को समझने के लिए एक प्रमुख उपकरण बन जाता है, जो बदलावों का नेतृत्व करने के साथ-साथ बदलावों का विरोध करने के लिए अग्रणी होते हैं। इस प्रकार सामाजिक अनुसंधान नए ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रयास करना है। सामाजिक अनुसंधान कार्य ज्ञान के वर्तमान रूपों का समर्थन करता है अथवा असहमति से नए ज्ञान को जोड़ने में हमारी सहायता करता है।

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की अनेक विद्वानों ने अनेक परिभाषाएं दी हैं, जो इस प्रकार हैं–पी.वी. यंग के अनुसार, ''हम सामाजिक अनुसंधान को एक वैज्ञानिक कार्य के रूप में परिभाषित कर सकते हैं, जिसका उद्देश्य तार्किक एवं क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों की खोज या पुराने तथ्यों को और उनके अनुक्रमों, अन्तर्सम्बन्धों, कारणों एवं उनको संचालित करने वाले प्राकृतिक नियमों को खोजना है।''

स्टीफेंसन ने सामाजिक अनुसंधान को सही और सत्यापित ज्ञान को बढ़ाने के लिए सामान्यीकरण के उद्देश्य से वस्तुओं की अवधारणाओं या प्रतीकों के हेर-फेर के रूप में परिभाषित किया है, चाहे वह ज्ञान एक सिद्धांत के निर्माण में या एक कला के अभ्यास में मददगार हो।

इस अध्याय के अंतर्गत हम सामाजिक अनुसंधान को समझना, सामाजिक अनुसंधान के विकल्पों को समझना, सामाजिक अनुसंधान में समाजपरक सूझ-बूझ को समझना, अनुसंधान पर दुर्खीम और उनके दृष्टिकोण को समझना तथा गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान को समझना आदि का अध्ययन करेंगे।

अध्याय का विहंगावलोकन

सामाजिक शोधकार्य के विकल्प
(Alternatives to Social Research)

अनेक वस्तुएं ऐसी हैं, जिन्हें आज हम जानते हैं, जो सामाजिक शोध के एक विकल्प के माध्यम से सीखी गई हैं। हमारी जानकारी के अनेक भाग उन तथ्यों पर आधारित होते हैं, जिन्हें हमें हमारे

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

परिवार और समाज द्वारा बताया गया है। एक व्यक्ति सामान्य ज्ञान के उपयोग के माध्यम से भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जबकि सामाजिक अनुसंधान कार्य ज्यादा संरचित, संगठित और व्यवस्थित प्रक्रिया होते हैं, ये वैकल्पिक नहीं होते। कुछ विकल्प ऐसे होते हैं, जिनका हम दैनिक दिनचर्या में सामान्य ज्ञान, मीडिया मिथक और व्यक्तिगत अनुभव के रूप में सामना करते रहते हैं।

व्यवहारिक ज्ञान (Common Sense)

व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक अवधारणा की गहरी समझ होना जरूरी है, जो स्वयं कार्य करने से या व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। अन्य शब्दों में, व्यवहारिक ज्ञान को वस्तुओं को प्राप्त करने से ही किया जा सकता है, यह वास्तविक जीवन के प्रयासों और कार्यों पर आधारित है। सामान्य ज्ञान लोगों के लिए उनकी रोजमर्रा की दुनिया और क्रियाकलापों का नियमित ज्ञान होता है। भिन्न-भिन्न समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, व्यावहारिक ज्ञान की जानकारी के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण अपनाते हैं।

नृवंशवैज्ञानियों (एथ्नोमेथोडोलॉजिस्ट) के लिए व्यावहारिक ज्ञान एक निरंतर उपलब्धि है, जिसे लोग कैसे ले जाना है और कैसे जारी रखना है, के अंतर्निहित नियमों के बाहर लेकर आते हैं और जो संगठन, अनुकूलता और सुसंगतता की भावना उत्पन्न करते हैं। प्रतीकात्मक अंतर्क्रियावादियों और अन्य व्याख्यात्मक समाजशास्त्रियों के लिए व्यवहारिक ज्ञान का कमस्तरीय परिशुद्ध विश्लेषण होता है, परंतु समाजशास्त्र को केन्द्रीय उद्देश्य के लिए व्यवहारिक ज्ञान को सामाजिक संसार के लोगों की मान्यताओं को जानने और विस्तार करने के रूप में देखा जाता है।

व्यक्तिगत अनुभव (Personal Experiences)

इस संसार में अनेक वस्तुओं को व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर सही माना जाता है और इसे ज्ञान का एक वैध स्रोत भी माना जाता है। यद्यपि व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित ज्ञान हमें भटका सकता है, जो सत्य माना जाता है, वह निर्णय लेने में कुछ विकृति का परिणाम हो सकता है, जो गलतियों की तरफ ले जाता है और प्राय: गलतियां हो जाती हैं। शोध इस प्रकार की गलतियों से दूर रहता है, परंतु दुर्भाग्यवश अनेक बार इस प्रकार की गलती वाले व्यक्तिगत अनुभवों को सच्चाई के रूप में स्वीकार भी किया जाता है। इस प्रकार व्यक्तिगत अनुभव में चार प्रकार की गलतियां हो सकती हैं, जैसे-अतिरंजना, चयनित अवलोकन, असामयिक समापन और परिवेशी प्रभाव की होती हैं।

असामयिक समापन होना (Premature Closure)

असामयिक समापन तब होता है, जब अनुसंधानकर्ता को लगता है कि उसके पास सभी जवाब हैं और उसे सुनने, जानकारी प्राप्त करने या किसी भी सवाल को उठाने की जरूरत नहीं है। इसका अभिप्राय है कि अनुसंधानकर्ता एक निर्णय लेता है अथवा वैज्ञानिक मानकों द्वारा जरूरी सबूतों की मात्रा या गंभीरता से जांच को समाप्त करता है।

परिवेशी प्रभाव (Halo Effect)

प्रभामंडल प्रभाव दर्शाता है कि हम सामान्य से ज्यादा सकारात्मक या प्रतिष्ठित होने में विश्वास करते हैं। इसका अभिप्राय है कि हम किसी तटस्थ और समान तरीके से सभी का विश्लेषण करने के बजाय व्यक्ति, स्थानों या चीजों के पूर्व लोकमत की स्वीकृति प्रदान करते हैं।

सामाजिक अनुसंधान में सामाजिक विचार (Sociological Imagination in Social Research)

सामाजिक विचार एक तरह का सामाजिक दृष्टिकोण है, संसार को ठीक प्रकार से देखने और विचार करने का एक ऐसा उपाय है, जो व्यक्तियों की दृष्टिगत समस्याओं और महत्त्वपूर्ण सामाजिक पहलुओं के मध्य संबंधों को देख सकता है। सामाजिक विचार में हमसे इस बात की आशा की जाती है कि सर्वप्रथम अपने दैनिक जीवन की चिरपरिचित दिनचर्या से अपने बारे में अलग सोचें ताकि उन पर नए तरह से ठीक प्रकार से विचार किया जा सके। समाजशास्त्रीय कल्पना एक मानवतावादी समाजशास्त्र के लिए विचार प्रदान करती है, जो हमारी जीवन के सामाजिक, व्यक्तिगत और ऐतिहासिक आयाम को जोड़ती है, जो आकारहीन अनुभववाद और भव्य सिद्धांत की एक समान समालोचना करे। एक सामाजिक कल्पना को अपनाने से हमें यह देखने को मिलता है कि अनेक घटनाएं, जो सिर्फ किसी एक व्यक्ति को परेशान करने लगती हैं, वे वास्तव में व्यापक पहलुओं को उजागर करती हैं।

सामाजिक अनुसंधान, दुर्खीम, उनके नुस्खे और सलाह (Durkheim and his Prescription for Sociological Research)

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान प्राकृतिक विज्ञान से भिन्न होता है। दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय साक्ष्यों की स्थापना के लिए दो मूलभूत प्रक्रियाओं को बताया है। प्रथम प्रक्रिया में सामाजिक परिघटना के कारण और प्रभाव संबंध की जांच शामिल थी। दूसरी प्रक्रिया सहवर्ती भिन्नता की विधि थी। परंतु प्रश्न यह है कि हम इस कारण और प्रभाव संबंध की जांच कैसे करते हैं? दुर्खीम का मानना था कि तुलना उन घटनाओं से की जा सकती है, जहां दोनों एक समान रूप से मौजूद हों और देखा जाए कि क्या इन अवस्थाओं में प्रदर्शित विविधताएं इस बात का सुझाव देती हैं कि एक को दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। जब प्रेक्षक की इच्छा पर परिघटना को कृत्रिम रूप से बनाया जा सकता है तो इस विधि को प्रयोगात्मक विधि कहा जाता है। इसके विपरीत, अगर तथ्यों का निर्माण हमारे नियंत्रण में नहीं है और हम उन्हें सिर्फ उसी तरीके से एक साथ ला सकते हैं, जिस प्रकार से वे सहज रूप से निर्मित किए गए हैं। इस तरह की नियोजित विधि को अप्रत्यक्ष प्रयोग या तुलनात्मक विधि कहा जाता है।

विशेष रूप से दुर्खीम का समाजशास्त्रीय वर्णन किसी परिघटना को उसके कारण या कारण को उसके प्रभाव से जोड़ने में टिका

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

हुआ है। चूंकि सामाजिक परिघटनाएं अनुसंधानकर्ता के नियंत्रण में नहीं होती हैं और प्रयोगकर्ता से बच जाती हैं, इसलिए तुलनात्मक विधि दुर्खीम के लिए समाजशास्त्र हेतु एकमात्र समुचित तरीका था। इस तरीके से दुर्खीम ने कॉम्टे द्वारा समर्थित की गई ऐतिहासिक विधि को खारिज कर दिया। इसके अतिरिक्त दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय साक्ष्यों को स्थापित करने का प्रयास किया। दुर्खीम ने जॉन स्टुअर्ट मिल की घोषणा को खारिज कर दिया कि अप्रत्यक्ष प्रयोग भी समाजशास्त्र के लिए अप्रयोज्य होते हैं। दुर्खीम ने मिल के अभ्युदय का विरोध किया कि एक ही प्रभाव विभिन्न कारणों का परिणाम हो सकता है। इसीलिए अगर हम समाजशास्त्रीय साक्ष्य को उजागर करने के लिए कार्य-कारण के सिद्धांत के अनुरूप तुलनात्मक विधि का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमें इस प्रस्ताव का पालन करना होगा, 'एक दिया गया प्रभाव का हमेशा एक ही संगत कारण होता है।'

दुर्खीम ने विचार व्यक्त किया कि तुलनात्मक विधि के समस्त रूप सामाजिक तथ्यों के अध्ययन के लिए समान रूप से लागू नहीं थे। दुर्खीम ने तब तीन तरीकों का प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसके द्वारा इस प्रकार के धारावाहिक व्यवस्थित विविधताओं की स्थापना की जा सकती है।

तीसरी विधि आनुवांशिक विधि थी। आनुवांशिक विधि के अंतर्गत तथ्यों के मूल्यांकन और संश्लेषण दोनों का यह दिखाते हुए निर्माण करती है कि घटना के प्रत्येक घटक को क्रमिक रूप से दूसरे में जोड़ा गया था, यह उन्हें उनकी विच्छिन्न अवस्था में और तुलना के व्यापक क्षेत्र के माध्यम से प्रकट करता है।

गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान (Qualitative and Quantitative Research)

सामाजिक विज्ञान के अनुसंधान कार्यों को दो गुणात्मक और मात्रात्मक श्रेणियों में बांटा जा सकता है–

गुणात्मक अनुसंधान (Qualitative Research)

सामाजिक विज्ञान में गुणात्मक अनुसंधान प्रमुख रूप से उस क्षेत्र में अवलोकन और बातचीत पर निर्भर करता है, जहां शोध कार्य किया जा रहा है। गुणात्मक अनुसंधान उन विधियों का उपयोग करता है, जो गुणवत्ता की व्याख्या करना चाहते हैं, जैसा कि इसके विषय की मात्रा के विपरीत है। इसलिए, यह प्रायः इस बात से चिंतित होता है कि क्यों, कब और कहां के बजाय एक घटना क्यों और कैसे की व्याख्या करने से संबंधित है। गुणात्मक अनुसंधान विधियों को प्रायः मानवविज्ञान, मानविकी और समाजशास्त्र जैसे क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है, हालांकि इनमें से प्रत्येक क्षेत्र का अध्ययन मात्रात्मक तरीकों के माध्यम से भी किया जा सकता है। चूंकि गुणात्मक अनुसंधान अन्वेषणात्मक है और इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि प्राकृतिक संसार की चीजों के बजाय मानवीय व्यवहार जैसी चीजों पर ध्यान क्यों दिया जाता है। इसलिए इसकी बहुत आलोचना की जाती है। हालांकि, कई विद्वान यह तर्क देते हैं कि चूंकि गुणात्मक विधियां परिकल्पना कर रही हैं, वे न सिर्फ मात्रात्मक तरीकों के रूप में मूल्यवान हैं, अपितु सैद्धांतिक मॉडल के उत्पादन के लिए आवश्यक हैं, जो मात्रात्मक अनुसंधान विधियों की दिशा को सूचित करने के लिए आते हैं।

गुणात्मक अनुसंधान के बौद्धिक आधार (The Intellectual Underpinnings of Qualitative Research)

मात्रात्मक अनुसंधान की अपेक्षा गुणात्मक अनुसंधान एक भिन्न बौद्धिक आधार से पैदा होता है। प्रमुख बौद्धिक अंतर्निहित भावनाएं, जो विशेष रूप से प्रस्तुत वातावरण के विपरीत होती हैं और खुलेआम व्यक्त नहीं की जाती हैं तथा जिन्हें अपने विशिष्ट ज्ञानवादी विज्ञान के साथ गुणात्मक अनुसंधान प्रदान करने के रूप में जाना जाता है। वे घटना विज्ञान, प्रतीकात्मक एवं सांकेतिक बातचीत, वर्स्टेन, प्रकृतिवाद और नृवंशविज्ञान कहलाती हैं।

परिघटना विज्ञान (Phenomenology)

समाजशास्त्र में परिघटनात्मक दृष्टिकोण सकारात्मकता की अनेक संकल्पनाओं को खारिज करते हैं। इसमें चेतना की एक व्यवस्थित जांच को शामिल किया जाता है, जिसे एकमात्र ऐसी घटना माना जाता है, जिसके संबंध में हम विश्वस्त हो सकते हैं। उनका विचार है कि सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञान की विषय-वस्तु मौलिक रूप से अलग होती है। इसलिए वे मानते हैं कि प्राकृतिक विज्ञान की विधियां और मान्यताएं मानव के अध्ययन के लिए अनुपयुक्त होती हैं। परिघटना शास्त्रियों का विचार है कि पदार्थ के विपरीत मनुष्य में चेतना के विचार, भावनाएं, इरादे और स्वयं के होने की जागरूकता होती है। इस वजह से उसके कार्य सार्थक होते हैं, वह परिस्थितियों को परिभाषित करता है तथा अपने और अन्य लोगों के कार्यों को अर्थ देता है। फलस्वरूप, यह सिर्फ बाहरी उत्तेजनाओं पर प्रतिक्रिया नहीं करता है, वह मात्र व्यवहार ही नहीं करता है, अपितु वह कार्य करता है। समाजशास्त्री सिर्फ बाहर से कार्रवाई का निरीक्षण नहीं कर सकते हैं तथा इस पर बाहरी तर्क नहीं दे सकते हैं। उन्हें आंतरिक तर्क की व्याख्या करनी चाहिए, जो करने वाले की कार्रवाई को निर्देशित करता है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (Symbolic Interactionism)

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद इस बात पर बल देता है कि वार्तालाप की प्रक्रिया के माध्यम से अर्थ उभरकर निकलते हैं। इसमें सामाजिक जीव को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें व्यक्ति अपने पर्यावरण की व्याख्या करता है और इस व्याख्या के आधार पर कार्य करता है। इस सिद्धांत में दो प्रमुख संकल्पनाएं होती हैं, स्थिति की परिभाषा और सामाजिक आत्महित। स्थिति की परिभाषा का अभिप्राय है कि इसके पीछे यह विचार होता है कि लोगों के कार्यों को व्यक्तिपरक अर्थ से ज्यादा आकार देता है। इसका तात्पर्य है कि अवस्थिति के विशुद्ध रूप से वस्तुनिष्ठ मुद्दों की तुलना में अर्थ उनकी स्थिति को प्रदान किया जाता है। मनुष्य अपने अनुभवों, आवश्यकताओं और इच्छाओं के आधार पर और सामाजिक समूह

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

के रीति-रिवाजों और मान्यताओं के आधार पर अवस्थिति के अर्थों का निर्माण करते हैं। सामाजिक आत्महित एक प्रक्रिया होती है। आत्महित, मैं और मैं की द्वंद्वात्मकता का परिणाम होता है।

प्रतीकात्मक अंत:क्रियावाद एक ऐसा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण है, जो सूक्ष्म-स्तरीय सामाजिक अंत:क्रिया पर बल देता है। प्रतीकात्मक अंत:क्रियावाद शब्द की रचना हर्बर्ट ब्लूमर ने की है। इस सिद्धांत के चार प्रमुख आधार हैं–

1. मानव प्राणी विशिष्ट रूप में संकेत प्रयोगकर्ता प्राणी है।
2. अंत:क्रियावादी सामाजिक विश्व को गतिशील और एक द्वंद्वात्मक तानाबाना मानते हैं।
3. अंत:क्रियावादी सामाजिक विश्व की अंत:क्रियात्मक प्रकृति पर बल देते हैं।
4. अंत:क्रियावादी प्रतीकों के पीछे छुपी हुई प्रक्रियाओं और अंत:क्रियाओं की खोज करते हैं ताकि वे सामाजिक जीवन के अंतर्निहित प्रतिमानों और स्वरूपों का निर्धारण कर सके। इससे स्पष्ट होता है कि प्रतीकात्मक अंत:क्रियावाद सूक्ष्म स्तरीय सामाजिक अंत:क्रिया पर बल देता है।

गुणात्मक अनुसंधान के लक्षण (Characteristics of Qualitative Research)

गुणात्मक अनुसंधान की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि यह अध्ययन किए जा रहे लोगों के दृष्टिकोण से होने वाली घटनाओं, क्रियाओं, मानदंडों के मूल्यों आदि को देखता है। यह रचनावादी है अर्थात् यह मानता है कि चीजों के अर्थ को निष्पक्ष रूप से नहीं खोजा जाता है। इसके विपरीत वे एक संदर्भ के भीतर लोगों द्वारा परिभाषित किए जाते हैं। यह व्याख्यात्मक नासमझ है क्योंकि यह इस बात पर केन्द्रित है कि विश्लेषण के लिए अलग-अलग परिभाषाएं क्या समान हैं। यह सामान्यीकृत परिणामों की व्याख्या को मुक्त करता है, जहां सभी व्यवहारों के लिए कोई सटीक या सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। परिणामों से नया ज्ञान एक प्रेरक प्रक्रिया के माध्यम से निकलता है। मौजूदा सिद्धांतों द्वारा दृष्टिकोण को साबित करने की जरूरत नहीं है। इसके विपरीत यह नए सिद्धांतों का उत्पादन करना चाहता है। संदर्भ में अवलोकन शोधकर्ता को संचार के गैर-मौखिक रूपों का अध्ययन करने की अनुमति देता है।

मात्रात्मक शोध की प्रकृति (Nature of Quantitative Research)

मात्रात्मक अनुसंधान में प्राकृतिक विज्ञान परिप्रेक्ष्य के अनेक गुणों को दर्शाया जाता है। मात्रात्मक अनुसंधान प्राकृतिक मॉडल द्वारा समर्थित होता है, जिसका तात्पर्य है कि प्राकृतिक विज्ञानों के तर्क और कार्यवाही को एक ज्ञानवादी विज्ञान मानक प्रदान करने के लिए लिया जाता है। यह अनुसंधान में उपयोग की जाने वाली एक विधि है, जो किसी घटना के बारे में सामान्यीकरण करने के लिए एक मंच के रूप में संख्यात्मक या मात्रात्मक डेटा का उपयोग करती है। यह आंकड़े संग्रह करने के विभिन्न और अनेक भिन्न-भिन्न तरीकों से जुड़ा होता है। सामाजिक सर्वेक्षण डेटा संग्रह के मुख्य तरीकों में से एक होता है। ज्यादातर सर्वेक्षण अनुसंधान एक अंतर्निहित अनुसंधान डिजाइन पर आधारित होते हैं, जिसे सह-संबंध या वर्गगत कहा जाता है। सर्वेक्षण और प्रयोग मात्रात्मक अनुसंधान के प्रमुख तरीके हैं, परंतु तीन अन्य तरीके भी महत्त्वपूर्ण हैं–

1. पहले से एकत्रित आंकड़ों का आधिकारिक और सरकारी आंकड़ों की भांति मूल्यांकन करना। आत्महत्या के आंकड़ों का दुर्खीम विश्लेषण प्राय: इस परंपरा का एक उदाहरण माना जाता है।
2. संरचित अवलोकना करना, जिससे अनुसंधानकर्ता पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अवलोकन रिकॉर्ड करता है और फलस्वरूप डेटा की मात्रा तय करता है।
3. सामग्री विश्लेषण, समाचार-पत्रों, जैसे–मीडिया की संचार सामग्री का मात्रात्मक विश्लेषण करना।

प्रत्यक्षवादी स्थिति

समाजशास्त्र के अनेक संस्थापकों का मानना है कि समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों के सिद्धांतों और प्रक्रियाओं पर आधारित हो सकता है। यह प्रत्यक्षवाद एवं संकेतवाद का मूल आधार होता है। अगस्टे कॉम्टे का विचार था कि प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों के अनुप्रयोग से समाज का एक सकारात्मक विज्ञान उत्पन्न होगा और इससे यह पता चल सकता है कि समाज का उद्‌विकास 'अचल कानूनों' का पालन करता है। यह बताता है कि मानव का व्यवहार कारण और प्रभाव के सिद्धांतों द्वारा शासित होता था, जो कि पदार्थ के व्यवहार की भांति अपरिवर्तनीय थे, जो प्राकृतिक विज्ञान का विषय था। प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण निम्नलिखित धारणाएं बनाता है-

1. मानव के व्यवहार, जैसे-पदार्थ के व्यवहार को निष्पक्ष रूप से मापा जा सकता है। जिस प्रकार, वजन, तापमान और दबाव जैसे मापकों द्वारा पदार्थ के व्यवहार की मात्रा को सुनिश्चित किया जा सकता है, उसी प्रकार मानव व्यवहार के लिए वस्तुनिष्ठ माप के तरीकों को तैयार किया जा सकता है।
2. उस व्यवहार पर बल देना जिसे प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।
3. सत्यापित तथ्यों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान सिद्धांत निर्माण में सहायता करता है।

मात्रात्मक शोध की कुछ व्यस्तताएँ (Some Preoccupations of Quantitative Research)

1. अवधारणाएं और उनका मापन–संकल्पनाएं शोध कार्यों को केन्द्रबिन्दु प्रदान करती हैं, परंतु वे सैद्धांतिक विचारों से अव्यवस्थित रूप से संबंधित होती हैं। प्रयोजनार्थक प्रक्रियाओं की जांच करने के लिए एक अनुसंधानकर्ता को इन संकल्पनाओं को एक-दूसरे के साथ जोड़ने और संबद्ध करने की जरूरत होती है। इसलिए सामाजिक संसार सामाजिक समूहों, रंगों, प्रजातीय पूर्वाग्रहों,

www.neerajbooks.com